तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : १

अप्रैल २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - १, अप्रैल २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	श्रमण भगवान वर्द्धमान महावीर	-	श्रीमती लता बोथरा	३
२.	महावीर के वक्तव्य प्रासंगिक	-	श्री चन्द्रप्रभ	९
३.	मलयासुन्दरी			२०

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

श्रमण भगवान वर्द्धमान महावीर

लता बोथरा

"तीर्थ की आदि प्रवर्तना करनेवाले, चरम अन्तिम तीर्थंकर,
पूर्व में हुए तीर्थंकरों द्वारा निर्दिष्ट और पूर्व में वर्णित समग्र गुणों से युक्त,
यावत् अपुनरावृत्ति सिद्धिगति को प्राप्त करने की अभिलाषा करने वाले,
श्रमण भगवान् महावीर को नमस्कार।"

कल्पसूत्र पृ० ३२-१६.

विश्व के सभी प्रचलित धर्मों में ईश्वरीय अवतार, पैगम्बर इत्यादि हुए हैं जब कि श्रमण धर्म के तीर्थंकर कोई ईश्वरीय अवतार नहीं थे। वे स्वयं के पुरुषार्थ से मानव से महामानव बने, पुरुष से महापुरुष बने थे। Mr. Neo rating ने अपने लेख 'My decision for Jainism' में लिखा है-

"Instead of God becomes man we see that
in the person of Mahavira man becomes God."

वो ईश्वरीय मानव नहीं होकर मानव से ईश्वर बने थे, यही जैन धर्म की प्रमुख विशेषता है जो उसे अन्य प्रचलित धर्मों से अलग करती है। Dr. A. N. Upadhayay के शब्दों में जैन धर्म में

"Man is his own master, his thoughts,
words and acts made him,
and continue to make him what he is,
it is in his hands to make or mar his present or future-------------

जैन साहित्य में तीर्थंकरों की परम्परा अनादि काल से चलती आ रही है। प्रत्येक युग में तीर्थंकर होते रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। इस अवसर्पिणी काल में २४ तीर्थंकर हुए हैं जिनका वर्णन हमें वैदिक पद्मपुराण में भी मिलता है - "इस भारत वर्ष में चौबीस तीर्थंकरों ने श्रावक कुल में जन्म लिया। उन्होंने केश लुंचन पूर्वक तपस्या में अपनी

आत्मा को युक्त करके अपने आपको पुरस्कृत (केवलज्ञान) किया। जब वे ध्यान में मौन होते थे तो फणीन्द्र (नागराज) उन पर छाया करते थे"।

वैदिक पद्मपुराण ५/१४/३८९।

तीर्थंकरों के नामों का वर्णन हमें महाभारत में विष्णु के सहस्र नामों में भी मिलता है जिनमें श्रेयांस, शान्ति, संभव ऋषभ, अजित, अनन्त, धर्म, आदि है। विष्णु और शिव का एक नाम सुव्रत भी मिलता है। (डा. बुद्ध प्रकाश-भारतीय धर्म और संस्कृति वैदिक परम्परा में) कहीं -२ विष्णु को भी पुरुषोत्तम अर्थात् पुरुषों में उत्तम माना गया है। इन्हीं पुरुषोत्तम को जब हम भगवान का रूप दे देते हैं तो वे विष्णु बन जाते हैं और वैदिक धर्म की मान्यता प्राप्त कर लेते हैं। नमोत्थुणं स्तोत्र में पुरुषोत्तमाणं शब्द से इसी बात की पुष्टि होती है। तीर्थंकरों की ये परम्परा अनादि काल से चली आ रही है। विश्व की सभी प्राचीनतम संस्कृतियों में इनके अस्तित्व के प्रमाण उपलब्ध हैं। इस परम्परा के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हैं जो आदि संस्कृति के संस्थापक भी हैं तथा समस्त विश्व में वे उपास्य हैं। प्राचीनतम उपलब्ध साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोत दोनों ही साक्ष्यों से ये प्रमाणित होता है कि प्राग ऐतिहासिक काल में श्रमण संस्कृति ही प्रमुख विकसित संस्कृति थी। विश्व के प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद में भी ऋषभदेव की स्तुति का वर्णन K. C. Lalwany के शब्दों में इस प्रकार मिलता है-

"O! Divinity! Dost thou Produce amongst us, of high descent a God like Rishabha, who by becoming an Arhan, which is the epithet of the first world teacher, may become the destroyer of enemies."

Rig veda X 166

ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से विस्तृत ही इस क्षेत्र का नाम अजनाभवर्ष से भारतवर्ष हुआ। भगवत् पुराण में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। जैन आगम ग्रन्थों में समवायंग में, ९वीं सदी में जिनसेन द्वारा रचित महापुराण में, १२वीं सदी में कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य जी ने अपने ग्रन्थ त्रिषष्टि श्लाका पुरुष चरित्र जिसका विश्व साहित्य में विशिष्ट स्थान है, तीर्थंकरों के जीवन चरित्र, उनके पूर्व भवों का विस्तृत उल्लेख किया है। अन्तिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर के

पूर्व जन्म की परम्परा प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से जुड़ी हुई प्रतिष्ठित मिलती है। चक्रवर्ती भरत के पुत्र मरिचि ने अपने दादा ऋषभदेव के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी। मुनि धर्म का ठीक प्रकार से पालन न कर सकने के कारण अनेक भव भ्रमण के पश्चात् आज से २००० वर्ष पूर्व तीर्थंकर महावीर ने राजा सिद्धार्थ एवं रानी त्रिशला के यहाँ जन्म लिया। ये तीर्थंकर परम्परा महावीर के साथ समाप्त नहीं होती वरन् उनके परमभक्त सम्राट श्रेणिक बिंबसार से आगे बढ़ती है। श्रेणिक बिम्बसार भी आने वाले काल में पद्मनाभ नाम के प्रथम तीर्थंकर होंगे। इस प्रकार इस अवसर्पिणी काल के अन्तिम २४वें तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर आने वाली उपसर्पिणी काल के नये तीर्थंकर परम्परा के वाहक भी हैं।

तीर्थंकर महावीर का जीवन-चरित्र और उनके पूर्व भवों का वर्णन आत्मा के परमात्मा बनने का चरित्र है। मानव भव दुर्लभ होता है क्योंकि आत्मा की मुक्ति मनुष्य भव में ही होती है। देव भव पुण्य फल भोग की दृष्टि से अच्छा हो सकता है पर सम्यकत्व की प्राप्ति मनुष्य भव में ही होती है। मनुष्य अपने कर्मों से अपनी मुक्ति और भव भ्रमण का अन्त कर मनुष्य भव को सार्थक बना सकता है।

भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन पुनः जन्म की मान्यता के साथ - साथ कर्म के जैन सिद्धान्त की भी पुष्टि करता है। कहीं - कहीं भगवान के २७ भवों का वर्णन मिलता है और कुछ जगहों में ३३ भवों का भी वर्णन है। कुछ प्रमुख भवों का वर्णन इस प्रकार है।

नयसार - सबसे प्रथम भगवान महावीर के जीव ने नयसार के भव में सम्यकत्व की प्राप्ति की थी। मार्ग से भटके और क्षुधा से व्याकुल साधुओं को आहार - पानी से उनका आतिथ्यकर उन्हें आगे बढ़ने का पथ दिखाया और उनके उपदेशों का जीवन भर पालन किया।

मरीचि - नयसार का जीव तीसरे भव में चक्रवर्ती भरत का पुत्र मरीचि नामक राजकुमार हुआ।

एक समय भगवान ऋषभदेव पुरिमताल के उद्यान में पधारे। नागरिकगण और राज परिवार के सब लोग भगवान् को वन्दन करने और धर्मोपदेश सुनने गये। भगवान् ने वैराग्यजनक धर्मदेशना की जिसे सुनकर मरीचि संसार से विरक्त हो गये और अनेक राजपुत्रों के साथ श्रमण - धर्म की प्रव्रज्या लेकर भगवान् के साथ विचरने लगे।

बहुत समय तक प्रव्रज्या पालने के बाद मरीचि श्रमण-मार्ग की कठिन क्रियाओं से ऊब गये और साधुवेश के बदले उन्होंने एक नूतन वेश धारण किया। हाथ में त्रिदण्ड, सिर पर शिखा तथा छत्र, पाँवों में पादुकायें और शरीर पर गेरुआ वस्त्र धारण कर अपने को निर्ग्रन्थ श्रमणों से अलग कर लिया।

एक बार राजा भरतने ऋषभदेव से पूछा-भगवन्! आपकी इस धर्मसभा में कोई भावी तीर्थंकर है? उत्तर में मरीचि की तरफ इशारा करते हुए भगवान् ने कहा - राजन्! यह त्रिदण्डी तेरा पुत्र मरीचि इसी अवसर्पिणी काल में चौबीसवाँ महावीर नामक तीर्थंकर होगा। इतना ही नहीं, तीर्थंकर होने से पहले यह भारतवर्ष में त्रिपृष्ठ नामक वासुदेव होगा। उसके बाद पश्चिम महाविदेह में प्रियमित्र नामक चक्रवर्ती होगा और अन्त में भारतवर्ष में अन्तिम तीर्थंकर महावीर होगा।

भगवान् के मुख से भावी वृत्तान्त सुनकर भरत मरीचि के निकट जाकर वन्दनपूर्वक बोले-मरीचि! मैं तुम्हारे इस परिव्राजकत्व को नहीं वन्दन करता पर तुम अन्तिम तीर्थंकर होनेवाले हो, यह जान कर तुम्हें वन्दन करता हूँ। संसार में जो बड़े - बड़े लाभ हैं वे सब तुम्हें ही मिल गये हैं। तुम इसी भारतवर्ष में त्रिपृष्ठ वासुदेव, महाविदेह में प्रियमित्र चक्रवर्ती और फिर यहाँ वर्द्धमान नामक चौबीसवें तीर्थंकर होगे।

भरत की बात से मरीचि बहुत प्रसन्न हुआ। वह अहं करके बोला - अहा! मैं वासुदेव, चक्रवर्ती और तीर्थंकर होऊँगा! बस मेरे लिये इतना ही बहुत है।

मैं वासुदेवों में पहला! पिता चक्रवर्तियों में पहले! और दादा तीर्थंकरों में पहले! अहो! मेरा कुल कैसा श्रेष्ठ है!

भगवान् ऋषभदेव की जीवितावस्था में मरीचि भगवान् के साथ विचरते रहे और उनके निर्वाण के बाद उनके शिष्यों के साथ। उनके पास जो उपदेश श्रवण करने जाता उसे श्रमणधर्म का उपदेश करते और वैराग्यप्राप्त दीक्षार्थी को साधुओं के पास भेजते। कोई यह पूछता कि आप खुद दीक्षा क्यों नहीं देते? तब कहते - मैं खरा साधु नहीं हूँ, यथार्थ साधुमार्ग वही है जो श्रमण पालते हैं।

एक बार मरीचि बीमार पड़े। वे विशाल साधु - समुदाय के साथ थे तथापि असंयत समझ कर श्रमणों ने उनकी परिचर्या नहीं की। अब मरीचि को अपनी असहायावस्था का भान हुआ और उसे अपने लिये एक शिष्य की आवश्यकता प्रतीत हुई।

एक बार मरीचि के पास कपिल नामक राजपुत्र आया। मरीचि ने उसे संसार की असारता का उपदेश किया कपिल संसार से विरक्त होकर साधु होने को तैयार हुआ तब मरीचि ने उसे साधुओं के पास श्रामण्य लेने को कहा। कपिल ने कहा-मैं आप के मत में प्रव्रजित होना चाहता हूँ। क्या आपके मत में धर्म नहीं है? मरीचि ने कहा - है। धर्म वहाँ भी है और यहाँ भी। यह कहकर उन्होंने कपिल को अपना शिष्य बना लिया। सांख्य मत का प्रारम्भ कपिल से माना जाता है।

चौरासी लाख पूर्व वर्ष का आयुष्य पूर्ण करके मरीचि ने ब्रह्मदेव लोक में देवपद प्राप्त किया।

भगवान महावीर २६००वीं जन्म जयन्ती समारोह के शुभारम्भ का भव्य आयोजन

शस्य श्यामल बंग भूमि की आदि संस्कृति का उत्स जैन धर्म रहा है। २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का इस क्षेत्र से गहरा सम्पर्क रहा था। जिसका प्रभाव बंगाल के मानस पर आज भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। जैन धर्म के अन्तिम २४वें अधिनायक श्रमण भगवान वर्द्धमान महावीर का जन्म क्षेत्र यद्यपि बिहार की पावन भूमि रही लेकिन यह क्षेत्र बहुत ही स्पष्ट रूप से आगम ग्रन्थों में मिलता है। बंगाल की संस्कृति की मूल भित्ति में आज भी जैन दर्शन का जो प्रभाव देखने को मिलता है वह भगवान महावीर की देन कही जा सकती है। कहते है कि बंगाल आज जो सोचता है वही कल के भारत की सोच है और इसी को चरितार्थ किया है आज फिर इस भूमि ने भगवान महावीर के २६००वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोहों के शुभारम्भ से। यह हमारा सौभाग्य है कि हमने भगवान महावीर का २५००वाँ निर्वाण दिवस भी मनाया और २६००वीं जन्म जयन्ती मनाने का भी अवसर हमें प्राप्त हुआ है। जिसके लिये कलकत्ता में भगवान महावीर २६००वीं जन्म जयन्ती समारोह समिति का गठन किया गया। समस्त जैन समाज ने एक जुट होकर इस समिति के अन्तर्गत इस समारोहों की श्रृंखला का मंगलमय प्रारम्भ भगवान महावीर के

जन्म कल्याणक के दिन रविवार दिनाँक १६ अप्रैल २००० को नेताजी इंडोर स्टेडियम कलकत्ता में नवकार मंत्र के सामूहिक जाप अनुष्ठान द्वारा किया।

समारोह का प्रारम्भ श्रमणी श्री प्रतिभा प्रज्ञा जी के द्वारा मंगलाचरण से किया गया तत्पश्चात् समिति के मंत्री श्री सरदारमल कांकरिया ने स्वागत भाषण में समिति द्वारा आयोजित किये जाने वाले वर्ष व्यापी कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया। मान्य अतिथि श्री तपन सिकदर ने (संचार मंत्री) ने अपने सारगर्भिक भाषण में कहा कि वे बचपन से जिस संस्कार और संस्कृति में रहे है उसमें भगवान महावीर का सहयोग रहा है। भगवान महावीर ने पर्यावरण के विषय में जो दृष्टिकोण रखे आज के सभी वैज्ञानिक उसे मानते है। समणी प्रतिभा प्रज्ञा जी ने अपने वक्तव्य में आत्मा की मुक्ति पर जोर दिया। समारोह समिति के अध्यक्ष प्रो. लोढ़ा ने कहा कि धर्म वह चेतना है जो मनुष्य को संस्कारित एवं सचेष्ट कर मानवीयता की ओर बढ़ाता है। महामहिम राज्यपाल श्री वीरेन जे. शाह ने भगवान महावीर के आदर्शों का वर्णन करते हुये कहा कि जैन दर्शन में मानव ही ईश्वर बनते है, ईश्वर मानव नहीं। तीर्थंकरों का जीवन चरित्र ही प्रत्येक मानव को ईश्वरत्व प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। सभी गणमान्य अतिथियों को नवकार मन्त्र उत्कीर्णित स्वर्ण मंडित स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अन्त में श्री अश्विन भाई देसाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा के द्वितीय सत्र में राजकोट से पधारे नवकार मंत्र के महान आराधक श्री शशिकान्त भाई मेहता ने स्टेडियम में उपस्थित लगभग १० हजार लोगों को सामूहिक जाप अनुष्ठान कराया जिसमें पूर्ण स्पष्ट विवेचना तथा व्याख्या के साथ नवकार मंत्र की मालाएँ फेरी गयी। इतनी बड़ी संख्या में इस प्रकार का आयोजन जैन एकता और संगठन की दिशा में एक सफल और सार्थक प्रयास तो था ही साथ में भगवान महावीर के अनेकान्तवाद के व्यावहारिक रूप में अपना कर समस्त जैन समाज ने एक जुट होकर एकता के सूत्र में बंधकर सिर्फ भारत में ही नहीं वरन् समस्त विश्व को एकता, मैंत्री, करुणा और भाई - चारे का संदेश प्रेषित किया है।

महावीर के वक्तव्य प्रासंगिक

श्री चन्द्रप्रभ

हमारे कदम उन महान पदचिन्हों का अनुसरण कर रहे हैं, जो मात्र पदचिन्ह ही नहीं, अपने आप में समय के शिलालेख हैं। हमारी दृष्टि आसमान में जगमगाते असंख्य तारों में उस तारे को एकटक निहार रही है, जिसकी चमक में ध्रुव का वास है। हमारे काम उस अनहद संगीत को सुनने के लिए आतुर हैं, जो अंतर की वीणा से अनदरत झंकृत होता रहता है। ऐसी ताल जो बिना करतल के बज उठे, जिसमें दुनिया की सारी राग - रागिनियाँ समाविष्ट हो जाएँ। ऐसे नूर को हम घूँट - घूँट आकंठ पीना चाहते हैं, जिसमें मानवता की, प्रेम की शुभ्रता झलकती हो। हम चल रहे उन्नति के ऐसे शिखर की ओर, जो सर्वोच्च है- हिमालय से भी उत्तुंग, असीम ऊँचा।

दुनिया के उपवन में बहुत सारे फूल खिले हुऐ हैं, लेकिन एक फूल ऐसा है जो अनायास हमें प्रभावित करता है। क्योंकि यह फूल हम सबके करीब है, हमारे बीच में से ही खिला हुआ हैं, लेकिन हमसे बहुत ऊँचा उठ चुका है। यह फूल महावीरत्व का है। वह शिखर, वह गौरीशंकर आत्मविजय का है। वह ध्रुवतारा केवलत्व का है। वह अनहद संगीत महावीर के अमृत अनुभव का है।

महावीर के वक्तव्य इतने स्पष्ट है, जितना स्पष्ट और प्रखर स्वयं सत्य है। जितना प्रिय सत्य होता है, उतने ही प्रिय महावीर के उपदेश हैं। ये उपदेश हितकारी होते हुए भी जैसे सत्य कभी - कभी हमें कटु लग जाता है, ऐसे ही महावीर के वचन, उनके समाधान सुमधुर होते हुए भी चंचल मन को थोड़े चुभ सकते हैं। महावीर की वाणी नितांत निर्मल, आडम्बर - मुक्त है; जैसा महावीर का स्वयं का जीवन था - निरभ्र, निर्द्वन्द्व, निर्ग्रन्थ।

महावीर की पूजा करने वाले भी महावीर के धर्म को भलीभाँति

समझ नहीं पाये। उन्होंने श्वेताम्बर और दिगम्बर के भेद में महावीर के वरदान को बाँट दिया। तेरहपंथ और स्थानकवासी की चारदीवारी में, संप्रदायों और मत - मतान्तरों के मकड़जाल में महावीर की विरासत को उलझा दिया। पानी की सतह पर तैरने वाले गिरती -उठती लहरों की पृथकता को ही देख पाते हैं, गहराई में छिपी जल की स्थिरता को, उसकी एकरूपता और एकसारता को नहीं जान पाते।

महावीर के संदेश सारी मानवता के लिए हैं। महान व्यक्तित्व और उनकी देशना किसी एक व्यक्ति या समाज की जागीर नहीं होती। उनका निष्पक्ष, निस्पृह अवदान सम्पूर्ण चराचर जगत के लिये होता है। अच्छाई को आत्मसात करने का अधिकार प्राणिमात्र को है। महावीर को जीने का, महावीर की देशना के फूल अपने अंतःकरण में खिलाने का सबको अधिकार है। उनके नाम पर दुनिया चाहे कितने मत - मजहब खड़े कर ले, लेकिन महापुरुष अपना कोई मत या मजहब नहीं चलाते, उनका कोई पक्ष और आग्रह नहीं होता। जिन लोगों को महापुरुषों के नाम पर अपनी राजनीति चलानी होती है, वे ही लोग मत या मजहब की मेढ़ों में महासागरों को बाँधने का नादान प्रयास करते है।

महापुरुष किसी संप्रदाय की संकीर्णता में आबद्ध नहीं होते। क्या कोई यह दावा कर सकता है कि कृष्ण का अवतरण केवल हिंदुओं के लिए ही हुआ है? क्या किसी ईसाई को कृष्ण की गीता को आत्मसात् करने का अधिकार नही है? महावीर का जन्म क्या सिर्फ जैनों के लिए ही हुआ है? जैनेतर समुदायों को महावीर के सिद्धान्तों को आचरित करने का अधिकार नहीं है? अगर यह अधिकार नहीं है तो जैनत्व भी संकुचित है और हिंदुत्व भी। मोहम्मद साहब के संदेश, उनकी सामाजिक समता सारे विश्व में आचरित होनी चाहिए। जीसस का प्रेम और उनकी करुणा, उनकी सेवा - भावना को मानवमात्र के सुख की धारणा का आधार बनना चाहिए। कृष्ण का कर्मयोग, उनकी अनासक्ति और स्थितप्रज्ञता के पुष्पों से सारी मानवता को सुवासित होना चाहिए। महावीर की अहिंसा, उनका सापेक्षवाद, उनका अपरिग्रह सारे संसार के लिए मंगलकर है। बुद्ध का शीलवान, प्रज्ञावान, और समाधिस्थ होने का संदेश सारी

धरती के लिए है। धरती को ये संदेश बगैर कोई दुराग्रह रखे, स्वीकार करने चाहिये। अच्छों और अच्छाइयों में कोई भेद नहीं होता।

अगर व्यक्ति केवल जैन बनकर महावीर को सुनेगा, वह महावीर से सौ कोस दूर रह जायेगा।वहीं अगर हिंदू बनकर महावीर को सुनने से परहेज रखेगा, तो वह विराटता से वंचित रह जायेगा। महावीर से उसकी आत्मा के संवाद हो ही नहीं पायेगे। महावीरत्व के फूलों की सुवास उसकी आत्मा की सुवास नहीं बन सकेगी। जैसे आकाश के सूरज - चाँद सबके लिये हैं, जैसे आग सबकी रोटियाँ सेकती है, जैसे पानी सबके गले की प्यास बुझाता है, ऐसे ही महावीर सबके लिए हैं, कृष्ण भी सबके लिए हैं, मोहम्मद और जीसस भी सबके लिए है। हमारी दृष्टि जितनी विस्तृत होगी, हमें हर दीये में एक - सी ही ज्योति दिखाई देगी। भेद गिरेंगे, अभेद उभरेगा।

अच्छा होगा, एक बार आप भूल ही जाओ कि आप किस संप्रदाय के हैं। केवल यही भाव रखें कि हमें महावीर को खुले ह्रदय से सुनना है। आप अपने जीवन में गुणात्मक समृद्धि के लिए महावीर के सिद्धान्तों को समझें और स्वीकारें। हो सकता है कि महावीर किसी हिंदु के काम आ जायें। यह संभव है कि महावीर जैनों के काम न आयें। क्योंकि एक जैन आदमी ने तो मान ही लिया कि वह जन्मजात जैन है, चाहे वह महावीर के पदचिह्नों पर चलें या न चले। एक हिंदू ने यह मान ही लिया कि वह राम की मर्यादाओं को स्वीकार करे या न करे, उसे हिन्दुत्व का प्रमाण - पत्र तो मिल ही गया है। ऐसे लोग वंचित रह जाते हैं। पूरी तरह निरपेक्ष, पंथ - निरपेक्ष बनकर अगर महावीर के संदेशों को सुनोंगे, तो महावीर हमारे करीब, बहुत करीब होंगे। एक दृष्टि से तो कहूँगा कि कृष्ण और राम से भी ज्यादा करीब अपने आपको पाओगे।

कृष्ण तो अवतार माने गये हैं। महावीर किसी ईश्वर के अवतार नहीं हैं। महावीर हम जैसे ही इंसान है और इंसान में भी ईश्वरत्व को खिलाया जा सकता है, महावीर इसकी स्थापना हैं। महावीर के पास कोई बाँसुरी नहीं है कि जिसकी स्वर - लहरी के सम्मोहन से वे जगत् को मोहित कर लें। महावीर के पास तो खुली हथेली की तरह खुला

सत्य है। सम्मोहन का उनके पास कोई मार्ग नहीं है। महावीर केवल उनके काम के हैं, जिनको सत्य से प्यार है, जिनकी आँखों में सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की कोई ऋचा, कोई संगीत फूटा है। जिन्हें सत्य से प्रेम नहीं, महावीर उनके किसी काम के नहीं। कोई व्यक्ति महावीर के साथ वणिक-बुद्धि के साथ पेश आये, तो महावीर उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखते।

वणिक-बुद्धि का आदमी तो धर्म के क्षेत्र में भी व्यवसाय को ले आयेगा। वह शिव - मन्दिर के पुजारी को सौ रुपये का नोट थमाकर कह देगा कि मेरे नाम से महामृत्युंजय का पाठ करवा देना, पूजा करवा देना, ताकि मेरा मृत्यु-चक्र टल जाये। वह धर्म को पैसे से खरीदना चाहेगा। धर्म का संबंध पैसे से नही, संयम और समर्पण से है। यह मार्ग धर्म को खरीदने का नहीं है, धर्म के क्षेत्र में जाकर पैसे के प्रति रहने वाली पकड़, लालसा, परिग्रह के भाव को विसर्जन करने का है।

महावीर के पास कोई सुदर्शन - चक्र नहीं है कि उठा ही ले किसी जयद्रथ या शिशुपाल का वध करने के लिए। कोई ब्रह्मास्त्र नहीं है कि अधर्म के प्रतीक बने रावण के वध के लिए उपयोग कर लें। वध करने या करवाने का प्रसंग आ ही पड़े, तो महावीर अपनी ही गर्दन शस्त्र के आगे कर देंगे। महावीर के पास न पांचजन्य शंख है और न गांडीव धनुष। महावीर तो बिल्कुल हम जैसे हैं। ऐसे ही जैसे कि हम माँ की कोख से पैदा होकर आये। महावीर तो सारी - जिंदगी ऐसे ही रहे-शिशुवत्! महावीर के अंतःकरण में नकली हरिण की मृगतृष्णा नहीं है, जो पत्नी की क्षुद्र चाहना के भँवर में फँसकर स्वयं को तो संकट में डाले ही, महासती का सतीत्व भी विपत्ति के सागर में डुबो दे।

हम जाते हैं महावीर के चरणो में शीश नवाने। हम चरणों में चढ़ाते हैं कुछ, और बदले में पाना चाहते हैं कुछ। लेकिन हमारा चाहा हुआ न दे पाएँगे महावीर। हम तो चाहते है कि महावीर किसी जादू की छड़ी घुमाएँ और हम रोग - शोक से मुक्त हो जाए। हम चाहते है कि महावीर की अंगुली के एक इंगित से हम समृद्धि के शिखर पर जा बैठें।

हम चाहते हैं महावीर से कोई ऐसा वरदान, जो हमारी सारी विपत्तियों को तत्क्षण हर ले और हम सुख-शांति से सराबोर जीवन जी सकें।

सुख - शांति दे तो सकते हैं महावीर, पर वह अपने तरह की है, विकृत धाराओं से मुक्त होने की है। महावीर के पास वह अमोद्य शक्ति है, जो मनुष्य को हर विपत्ति में समता से जीना सिखाती है। महावीर के पास तो है वह सादगी, वह अहिंसा और सत्य का बोध, जो हमारे क्रोध, मान, लोभ के विकारों को विगलित कर सकता है, जैसे चौदह वर्षों से एक पाँव पर खड़े बाहुबली का अहंकार सत्य का बोध होते ही नष्ट हो गया। महावीर के पास तो ज्ञान की वह नौका है, जिसके जरिये बाल-अतिमुक्त भी भवसागर को पार कर गया। वह आँख है, जिसके इंगित को समझते ही चंदनबाला जैसी सन्नारियाँ अपने भव-भव की पीड़ा को समाप्त करने का मार्ग पा गई।

महावीर अवतार नहीं हैं। वे तो चिकित्सक हैं। चिकित्सक के घर कोई रोगी इलाज के लिए जाये, तो चिकित्सक को रोगी का विश्वास जीतने के लिये विराट स्वरूप धारण करने की जरूरत नहीं पड़ती। वह चिकित्सक न तो बाँसुरी बजाता है, न सुदर्शन-चक्र चलाता है, वह तो सीधे रोगी के नब्ज पर हाथ रखता है और जाँचता है कि उसका रोग क्या है। निदान होते ही उसे यथोचित औषधि देकर रोगमुक्त कर देता है। महावीर चिकित्सक हैं, जो मनुष्य - जीवन से जुड़े रोगों की पहचान करते हैं। जिनके निदान और उपचार से हमारे अन्तःकरण में जन्म - जन्मान्तर से जुड़े हुए रोग निर्मूल हो सकते हैं। इसीलिये मैंने कहा, महावीर किसी अलौकिक अवतार की अपेक्षा, हमारे और हमारे मर्म के ज्यादा करीब हैं।

महावीर आपकी - मेरी तरह ही जन्मे - पले । उन्होंने विवाह भी किया, संतान भी हुई, संन्यास भी लिया। जीवन के अनंत वैभव को जीकर संसार की निस्सारता को जाना, आत्मज्ञान, परमज्ञान को उपलब्ध हुए और मुक्त हो गए। बिल्कुल सीधा - सादा जीवन। मिला तो खाया, न मिला न सही। रहने को ठौर - ठिकाना मिल गया तो रह लिये, न मिला तो आसमान की छत के नीचे ही अपना बसेरा कर लिया।

मच्छर, बिच्छू या सर्प ने उनके रक्त को अपना भोजन बनाना चाहा तो उन्होने उन्हें अपना रक्तपान करने दिया। महावीर तो अपने में लीन रहे, देहातीत, आत्मलीन। आत्मा ही उनकी आँख थी। आत्मा ही उनका ह्रदय रहा। आत्मा ही उनका पथ था। तभी तो जो उनके पदचिन्ह्रों पर चलते हैं, वे पा ही जाते हैं उस परम - माधुर्य को, परम-प्राप्तव्य को, जो प्रत्येक भव्यात्मा का लक्ष्य है।

महावीर हम सबके कल्याणकमित्र हैं, सद्‌गुरु हैं, प्रणम्य पुरुष हैं। वे निर्ग्रन्थ हैं। अन्तर्मन की ग्रन्थियाँ कैसे खुलें महावीर के पास वे समाधान हैं। महावीर के वचन वे बीज हैं, जिनका वपन हमारे अंतःकरण की गहराई में हो जाय, तो हमारी अन्तरात्मा में भी महावीर की ही तरह शांति और आनन्द से भरपूर भगवत्ता के पुष्प खिल सकते हैं। महावीर वह गंगा हैं, जो हम सबके भीतर फूटनी ही चाहिये-शुचिता और समाधि के लिए। महावीर, उनका धर्म, उनका शांति का मार्ग, उनके जीने का मार्ग हम सब के लिए एक निमंत्रण है।

महावीर आह्वान करते है-आओ मेरे साथ चलो। जहाँ मैं पहुँचा हूँ, तुम भी पहुँच जाओ। महावीर का किसी से कोई स्वार्थ नहीं। तुम अगर पहुँचते हो, उनके दीये से लौ लगाते हो, तो यह उनकी ओर से परमार्थ हुआ। सूरज की उमंग से जो फूल खिल उठें, तो यह उन फूलों का ही सौभाग्य है। खिलना- खिलाना ही तो वास्तव में संघ का निर्माण करना है।

महावीर की देशना, महावीर का मार्ग, महावीर की दृष्टि घट से छलकता हुआ अमृत है, जो हम सबके लिये आह्लाद का माध्यम बन सकता है। हमें जीने की नई चेतना और नई दिशा दे सकता है। इस युग में धर्म के हजारों - हजार रूपों के बीच सत्य के अन्वेषण का उपक्रम बन सकता है। महावीर को हमसे कोई स्वार्थ नहीं है। यह कतई आवश्यक नहीं कि हम महावीर के चरणों में कुछ चढ़ाएँ। जिस महामानव ने राजवैभव त्याग दिया हो, जो नग्न - निर्वस्त्र होकर जी रहा हो, उसे हमसे भला क्या स्वार्थ होगा? जहाँ त्याग ही मार्ग है, वहाँ कोई स्वार्थ

नहीं होता। महावीर के मार्गदर्शन की न कोई फीस है, न कोई सौदा-चिट्ठी। वे तो मुक्त-मन, अनंत-हस्त लुटा गए; हम ही लूट न पाए।

स्वयं महावीर के अनुयायी/साधु-संत ही भटक गये हैं, जो श्रावक और धर्मानुरागियों के साथ निःस्वार्थ भाव नहीं रखते। सब स्वार्थ में रच - पच गए हैं। किसी का स्वार्थ पैसा है, तो किसी का स्वार्थ पद-प्रतिष्ठा। और सब लगे हैं स्वार्थसिद्धि के लिए, जी-हुजूरी में। महावीर को यह परतंत्रता, जी - हुजूरी स्वीकार नहीं है। उनका अपना कोई स्वार्थ नही, मात्र एक पुकार है कि तुम आओ और जीओ आनंद को। निर्वाण आनन्द का धाम है। आनन्द को जी सको, तो अच्छा है; अन्यथा जैसी जिसकी नियति।

धर्म के हजार रूप, हजार प्रकार, हजार आकार और हजार झमेले। मनुष्य बिल्कुल ही अनभिज्ञ - सा बना हुआ है कि वह धर्म के इतने सारे मार्गों में से किस मार्ग को स्वीकार करे और किस मार्ग को जीये। अब धर्म का कोई एक रूप हो, तो मान भी लें। धर्म बंटा तो हिन्दू, जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई, सिख, पारसी आदि कई धर्म अस्तित्व में आये। यह बँटवारा इतने तक ही सीमित नहीं रहा। हिंदू धर्म में भी सनातनी अलग और वैष्णवी अलग। इनमें भी राम-भक्त अलग और कृष्ण-भक्त अलग। जैनों में भी श्वेताम्बर अलग दिगम्बर अलग। बौद्धों में हीनयान और महायान; इस्लाम में शिया और सुन्नी; ईसाई धर्म में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट। कितने भेद! कितने बँटवारे! केवल भेद हो, तो भी कोई दिक्कत नहीं। सारे धर्मों के भी अपने - अपने पंथ, अपने - अपने संप्रदाय और वह भी एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत! ऐसी स्थिति में हम किस पंथ को अपनायें और किसको छोड़ें? इन सबके बीच असली धर्म तो जाने कहाँ खो गया। रस बह गया; आम के नाम पर हाथ में गुठलियाँ रह गईं।

अब, हर धर्म, हर पंथ में हजार झमेले हैं। कुछ परंपराएँ कहती है कि सिर पर जटा बढ़ाओ, यही धर्म का सार है। कुछ कहेंगे जटा बढ़ाना पाप है, केवल चोटी ही रखनी चाहिये। चोटी रखो, तो उसमें भी झमेले हैं। चोटी कैसी हो - पतली, मोटी या चौकोर? कुछ कहते हैं कि

चोटी रखना भी पाप है।इसलिए सिर को मुँडवा लो। सिर मुँडवाओ तो उसमें भी मत-मतान्तर। कुछ परंपराएँ कहती हैं कि उस्तरे से साफ करवा लो और कुछ कहती है कि हाथ से नौंच - नौंचकर साफ करो। दाढ़ी - मूँछ में फिर वही झगड़ा। कुछ धर्म कहते है कि मूँछ रखनी चाहिए और कुछ कहते हैं कि मूँछ नहीं रखनी चाहिये। अब हम किसे मानें? किसे छोड़े?

तिलक लगाते हो, तो उसमें भी झगड़ा। तिलक चंदन का लगाये, भस्म का लगायें या कुमकुम का! लम्बे तिलक, त्रिशूल वाले तिलक और कुछ तिरछी रेखाओं वाले तिलक। सबकी अपनी अपनी सोच, अपने अपने तर्क, अपने अपने प्रमाण, भिन्न मत - भिन्न पहचान। तिलक के बाद फिर मतभेद मालाओं में। रूद्राक्ष की माला के प्रशंसक कहेंगे कि रुद्राक्ष की माला ही पहनी जाये, उससे अमुक-अमुक फायदे हें, तो विरोधी कहेंगे - रुद्राक्ष में क्या पड़ा है! तुम तुलसी की माला पहनों। कृष्ण ने भी यही माला पहनी थी। कुछ लोग चंदन की माला पहनने का भी सुझाव देंगे। कुछ कहते हैं कि माला पहनने की जरूरत ही नहीं।

वस्त्रों को लेकर भी विभिन्न मत-मजहबों में उतने ही भेद, उतने ही मतांतर हैं। लोगों ने तो अपने पंथ का परिचय ही कपड़ो से बना दिया है। धर्म तो कहीं पीछे छूट गया और पीतांबर, नीलांबर, श्वेताम्बर, दिगम्बर जैसे पंथ उभर आये हैं। अब उनकी पोशाक के तरीके में भी फर्क। अगर दो इंच कपड़ा ज्यादा हो गया हो, तो लोग कहेंगे-अरे, यह क्या, यह तो आप धर्म विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। उन लोगों को कैसे समझाया जाये कि कपड़ों में धर्म नहीं होता। साधु का वेश पहने लोगों को भी बुरे काम करते देखा है और पेंट-शर्ट पहनने वालों में भी सज्जनता देखी है। कोई कहेंगे सिलाई वाले कपड़े होने चाहिये और कोई कहेंगे कि सिलाई कर ली, तो हिंसा हो जायेगी। कोई आश्रम बनाकर रहना चाहते हैं; कोई कहता है कि नहीं, हमेशा यात्रा में रहना चाहिये। यात्रा में भी रहो, तो कुछ कहते है कि वाहन प्रयोग करें, जबकि कुछ वाहन का निषेध करते हैं और कहते है कि पैदल चलो। भोजन करने बैठे तो कुछ कर-पात्री होते हैं, कुछ काष्ठ -पात्री होते है और कुछ

कहते है कि हम चाँदी की थाली में ही भोजन करेंगे। अब किस किस की बात मानें!

मैं तो यह कहूँगा कि हर धर्म में अच्छाइयाँ हैं, अच्छे विचारक हैं, संयमी लोग हैं। जिन धर्मों की जो बातें हमें जीवन के साथ सहज लगें, हमारे जीवन के साथ संतुलित और समायोजित हो जायें, वे सब ब्रातें हमें स्वीकार्य हैं। आखिर प्रकृति ने आपको बुद्धि दी है, ह्रदय दिया है, आप स्वयं सोच सकते हैं। आप अपने जीवन का स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि मुझे कौन - से मार्ग पर चलना है। हर धर्म की बातों को पढ़ो और जो अच्छी लगे, एक गुणग्राहक बनकर उसे स्वीकार कर लो। आखिर हर धर्म का यही एक लक्ष्य है कि हम एक अच्छे, नेक आदमी बनें, जीवन-चक्र में धर्मचक्र का प्रवर्तन हो। अच्छाइयाँ हर जगह से स्वीकार करो, हर आदमी में अच्छाइयों को देखो। बुरे - से - बुरे आदमी में भी कोई न कोई अच्छाई तो मिल ही जायेगी। केवल इन रूपों, आकारों, प्रकारों, विधि - विधानों और क्रियाकांडों में अपने आपको मत उलझाओं। तुम ह्रदयवान बनों, आत्मवान। अपने जीवन को ऊपर उठाने का प्रयास करों। ऊपर की लीपापोती करते रहने की बजाय सम्यकदृष्टि के स्वामी बनो। शेर की खाल ओढ़ने की बजाय, भीतर के भेड़ियापन का त्याग करो।

मैंने सुना है : एक विदेशी महिला भारत आई। उसने भ्रमण के दौरान यहाँ कि एक महिला को रोटी बेलते हुए देखा। उसे आश्चर्य हुआ कि जैसे ही रोटी तवे पर डाली गई, वह अपने आप फूल गई। किसी ने हवा नहीं भरी, फिर भी गुब्बारे की तरह फूल गई। उसने रोटी को सिकते हुए ध्यान से देखा। उसने महिला से पूछा कि रोटी कैसे बनाई जाती है, तो महिला ने उस विदेशी महिला को सारी विधि समझा दी।

विदेशी महिला अपने देश लौटी। उसने अपने पति से कहा कि मैं हिन्दुस्तान जाकर कुछ पाक-विधियाँ सीखकर आई हूँ। तुम अपने मित्रों को बुलाओ, मैं उन्हें रोटी खिलाऊंगी। उसका पति प्रसन्न हुआ। उसने कई मित्रों को निमंत्रण दे दिया। महिला ने रोटी बनाने की दिनभर कोशिश की, लेकिन रोटी न बनी, तो न ही बनी। चूल्हा तो बाद में जले,

पहले तो समस्या आटे को गूँथने की थी रोटी के लिये आटा कैसे तैयार किया जाये । आटे में पानी डाला जाये या पानी में आटा? उस महिला को विचार आया कि क्यों न भारतीय महिला की तरह लाल रंग की साड़ी पहन लूँ तो बात बन जाये। उसने तुरंत ही लाल कपड़े को लपेटा और साड़ी का रूप दिया, मगर फिर भी वे ही हालात। यह सोचकर कि रोटी तभी बन सकेगी, जब वह दिखने में भारतीय महिला लगे, तो उसने श्रृंगार किया, मेक-अप किया लेकिन वही ढाक के तीन पात। सभी मित्र आ गये थे, लेकिन पत्नी द्वारा रोटी तैयार होती नजर न आई। इसी बीच उस महिला की भारतीय सहेली जब रसोई में आई, तो उसने सारा माजरा जाना। वह हँसी और कहा कि रोटी बनाने के लिये न तो वस्त्र बदलने की जरूरत है और न ही बनाव श्रृंगार की। रोटी बनाने के लिए तो एक सहज-सरल विधि को सीखने की जरूरत है।

यही बात मैं भी कहना चाहता हूँ कि चीजों को छोड़ने - बढ़ाने -घटाने, ऐसे आकार, वैसे आकार के शास्त्रार्थ में निर्वाण नहीं होने वाला, न मुक्ति होने वाली है। अन्तर्-परिवर्तन चाहिये, दृष्टि-परिवर्तन।

निर्वाण को उपलब्ध करने के लिये तो सीधी-सरल प्रक्रियाएँ, सीधे-सौम्य वक्तव्य और एक सीधी-सरल विधि चाहिये। जिनके जरिये हम उन पदचिह्नों का अनुसरण कर सकते है; अनहद संगीत को सुन सकते हैं, ध्रुव तारे के प्रकाश को अपने अंतःकरण में प्रकट कर सकते हैं। इसलिए मुद्दे की बात तो केवल इतनी -सी है कि महावीर को जीवन में समझना है, जीना है तो पूरी तरह से पंथ-निरपेक्ष होकर, बगैर किसी पंथ या संप्रदाय के होकर ही जी सकते हैं, समझ सकते हैं।

महावीर नहीं चाहते कि लोग उनके भक्त बनें। वे तो यह चाहते हैं कि हर आदमी महावीर बने। वे नहीं चाहते कि हर आदमी जैन बने, वे चाहते हैं कि हर आदमी जिन बने, आत्म-विजेता बने। अपने चित्त को विकार-विहीन करे। महावीर की बातें शांति के मार्ग की हैं। महावीर की बातें बहुत व्यावहारिक हैं, क्योंकि उन्होंने जो कुछ कहा, पहले उसे जीया है; उन्होंने हर पहलू को जाना है, समझा है। उनकी यही बातें बिल्कुल

सीधे-सादे-सरल सूत्रों के रूप में होंगी। आने वाले सात दिन हम महावीर के कुछ सूत्र लेंगे और यह समझेंगे कि किस तरह महावीर बीज से बरगद बने। किस तरह से माटी में समाया हुआ फूल खिल उठा। दीया ज्योतिर्मान हुआ। तारों की टिमटिमाहट में ध्रुवत्व का साक्षात्कार हुआ।

आज तो हमने महावीर का आपादमस्तक-दर्शन-वंदन ही किया है और यह समझने का प्रयास किया है कि महावीर को हम अपने साथ जी सकते हैं; उनके चरणों में बैठकर उनसे टूटी-फूटी भाषा में ही सही, कुछ बातें कर सकते हैं। मेरा आप सब लोगों को बड़े प्यार से निमंत्रण है, उतने ही प्यार से आप महावीर को सुनने, समझने और जीने के लिए तत्पर हों। सबको शान्ति का मार्ग आत्मसात् हो, सभी के द्वारा शांति के मार्ग का विस्तार हो। सम्प्रदाय और पंथगत कट्टरता की कथरी को किनारे रखो और हृदय के द्वार-दरवाजों को खोलो जिससे कि प्रवेश कर सके आपमें उन दिव्य पुरुषों के सत्य की किरणें। स्पष्ट हो सके जीवन और अध्यात्म की राहें। सत्य शास्त्र में नहीं, अनुभव में है। महावीर के सूत्र और संकेत समझें, अपने में उतरें, भीतर की ग्रन्थियों को भेदकर देह में भी विदेह बनें-ठीक वैसे ही जैसे स्वयं महावीर थे-निर्ग्रन्थ और विदेह।

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृति

मलयासुन्तरी और मलय कुमार का जन्म

क्रम से नवें महीने पूर्ण होने पर शुभ लग्न में महारानी चंपकमाला ने सुखपूर्वक महान् तेजस्वी पुत्र पुत्री रूप युगल को जन्म दिया। तुरन्त ही महाराज वीरधबल को वेगवती दासी ने राज सभा में आकर पुत्र और पुत्री के जन्म की बधाई दी। राजा के हर्ष का पार न रहा। मुकुट के सिवाय उसने अपने शरीर से तमाम अलंकार उतार कर दान में दे दिये। देश भर में हर्षोत्सव मनाया गया।

याचक जनों को खूब दान दिया गया। पापारंभ के व्यापार बंद कराये गए। कैदियों को छोड़ दिया गया। तमाम जीवों को अभय दान दिया गया। शहर को अनेकों प्रकार से सजाया गया, महाराज को बड़ी उमर में पुत्र-पुत्री होने में प्रजाजनों को भी आनन्द का पार न रहा।

इस प्रकार दस दिनों तक आनंदोत्सव कर सगे सम्बन्धी और प्रजाजनों को प्रीति भोजन कराया। जनता के समक्ष मलयादेवी का वरदान सफल होने से उसका नाम याद रखने के लिए, महाराज ने हर्ष पूर्वक अपने पुत्र-पुत्री का मलयकेतु और मलया सुंदरी नाम रक्खा।

ज्यों ज्यों कुमार और कुमारी वृद्धि को प्राप्त होने लगें त्यों-त्यों चंद्रमा से समुद्र की तरंगों के समान राजा और रानी के मनोरथ बढ़ने लगे। धीरे - धीरे वृद्धि पाते हुये कुमार मलयकेतु और मलयासुन्दरी अब विद्या ग्रहण करने की वय को प्राप्त हुए विद्या के बगैर राजकुल में पैदा होकर मनुष्य सच्ची शोभा नहीं पाता, यह समझ कर बालकों के हितैषी महाराज वीरधवल ने एक धुरंधर विद्वान कलाचार्य को बुला कर उसके पास राजकुमार और राजकुमारी को विद्याभ्यास करने के लिये रख दिया। बुद्धिमान् राजकुमार और राजकुमारी ने पूर्व पुण्य के उदय से थोड़े

ही समय के अन्दर पहले याद की हुई विद्या के समान तमाम कलाओं को संपादन कर लिया। राजकुमार अश्व - क्रीड़ा, हाथियों से लड़ना, और खड्ग खेल में अत्यन्त निपुण हो चुका था। अपनी कला की और भी उन्नति करने की इच्छा से धनुष बाण लेकर वह जब कभी लक्ष्य बेध करता था तब उसकी कला देख कर राजकुल के बड़े बड़े पुरुष हर्ष से चकित हो जाया करते थे।

मलयासुन्दरी का हृदय स्वभाव से ही करुणारूप था। वह भोले स्वभाव की थी। उसके हृदय और शरीर में कोमलता ने निवास किया था। माता पिता की संस्कारिता के कारण उनकी बचपन से ही धर्म में रुचि थी। वह अपने अनेक सद्गुणों के कारण समस्त राजकुटुंब को प्राणों से भी अधिक प्यारी थी। धीरे - धीरे अब उसने बाल्यावस्था का परित्याग कर दिया।

अब युवावस्था में राजकुमारी के शरीर की शोभा कुछ अपूर्व ही मालूम होती थी। उसके शरीर के अंग प्रत्यंग विकास को प्राप्त हो चुके थे। नेत्रों को आनन्द देनेवाली उसके शरीर की लावण्यता दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही थी। उसके लम्बे - लम्बे घुँघराले काले केश अति मनोहर मालूम होते थे। कमल के समान उसकी बड़ी - बड़ी स्निग्ध आखें देखने वालों के चित्त को हरण करती थीं। अष्ठमी के अर्धचन्द्राकार कपाल के नीचे कमान के जैसी टेढ़ी भोहें, बड़ी ही सरल नासिका उसके मुख मंडल की शोभा में अधिक वृद्धि कर रही थी। शुभ्र मोतियों के जैसी दन्तपंक्ति, उसके लाल - लाल होठों पर अतीव सुन्दर प्रकाश डालती थी। उसकी ग्रीवा तीन रेखाओं से शंख के जैसी शोभती थी। वक्षस्थल पर उभरता हुआ कठिन स्तन युगल, उसके नवयौवन के आगमन को सूचित कर रहा था। उसकी लम्बी - लम्बी कोमल भुजायें मृणाल दंड को भी लज्जित कर देती थीं। उसके शरीर का मध्य भाग सिंह की कमर के जैसा पतला और सुन्दर दिखायी पड़ता था। हथिनी की गति की भांति मंद मंद किन्तु विलास वाली उसकी चाल युवकों के मन को लुभाती थी।

चन्द्रावती में महाबल का गुप्त प्रवास

दोपहर का समय था। महाराज वीरधवल की राजसभा भरी हुई थी;। इतने में द्वारपाल ने आकर महाराजा को प्रणाम करते हुए कहा - सरकार ! राजद्वार पर पृथ्वीस्थानपुर नगर से राजा सूरपाल के सेनापति और उसके साथी आये हुये हैं। वे दरबार में आना चाहते हैं। हुक्म मिला, उन्हें यहाँ ले आओ। महाराज बीरधवल की आज्ञा पाकर द्वारपाल, स्थानकपुर से आये हुये मेहमानों को राजसभा में ले आया। आगन्तुक सेनापति, और उसके सहचारी राज पुरुष, महाराज वीरधवल के सामने पृथ्वीस्थानपुर से लाये हुए वस्तुओं का उपहार रख कर उन्हें झुक कर नमस्कार किया, और सबके सब अदब से एक तरफ खड़े हो गये। राजा वीरधवल ने बहुमान पूर्वक उनके पुरुस्कार को स्वीकार कर, उन सब को बैठने के लिये आसन दिलाये!

प्रसन्न होकर महाराज वीरधवल ने प्रश्न किया हमारे परम मित्र महाराजा सूरपाल के राज्य और परिवार में सब कुशल है न? हाथ जोड़ कर सेनापति ने नम्रता से उत्तर दिया महाराज़! धर्म के प्रताप से, और आप जैसे मित्र राजा की स्नेह भरी नजर से राज्य में सर्वत्र आनन्द है। महाराज सूरपाल ने आपके परिवार की कुशलता पूछी है।

सेनापति के साथ आये हुये मनुष्यों की तरफ नजर फैंकते हुये महाराज वीरधवल ने सेनापति के नजदीक बैठे हुये एक महान् तेजस्वी, सौम्यमूर्ति, भाग्यवान सुन्दर युवक को देखा। उसे देखते ही राजा की मनोवृति सहसा उस तरफ आकर्षित हो गई। अतः - महाराज ने प्रश्न किया सेनापतिजी, यह तुम्हारे साथ का युवक कौन है? इसकी सुन्दर आकृति तो राजकुमारों के समान तेजस्वी मालूम होती है। यह बात सुनते ही उस युवक का संकेत पाकर चतुर सेनापति बोल उठा - महाराज ! यह तो मेरा छोटा भाई है। चंद्रावती नगरी को देखने की इच्छा से हमारे साथ चला आया है। इस युवक को देख कर राजा के मन में कुछ और ही भाव पैदा हुआ था। कारण कि राजकुमारी मलयासुन्दरी

युवावस्था को प्राप्त होने से राजा अपनी चिंता को दूर करने के विचार में था, परन्तु यह राजकुमार नहीं है, यह समझकर उसने अपने विचार मन में दबा लिये।

राजकार्य निवेदन करने के बाद, राजा ने उन्हें सन्मान देकर निवास स्थान दिया। उस मकान में वे सब के सब जा ठहरे। राजसभा विसर्जन हुई। सभा से बाहर आने पर उस युवक ने अपने संबंध में उत्तर देने वाले सेनापति की बड़ी प्रशंसा की। क्योंकि यह बनावटी उत्तर देने का कारण उस युवक का चंद्रावती में गुप्त प्रवास था। उस सुन्दर महल में उतरने के बाद वह युवक अपने साथियों को कह कर अकेला ही चंद्रावती नगरी की शोभा देखने के लिये निकला।

पाठकगण ! ध्यान रक्खें पृथ्वीस्थानपुर विशाल दक्षिण देश में बसता था, वह नगर भी अपनी शोभा और समृद्धि में चंद्रावती नगरी से कम न था। यह शहर भी गोला नदी के किनारे पर ही बसा हुआ था। शहर के चारों तरफ सघन वृक्षों की घटा शहर की शोभा बढ़ा रही थी। शहर के नजदीक में धनंजय नामक यक्ष का मन्दिर था। आस पास में कुछ पहाड़ी प्रदेश भी था। समीपवर्ती पर्वतों में बहुतसी गुफायें भी दिखायी पड़ती थीं, जिनका उपयोग तपस्वी, योगी - पुरुष या चोर वगैरह करते थे। इस सुन्दर और समृद्धिशाली नगर में क्षत्रियवंशी महाराज सूरपाल राज्य करते थे। वीरधवल और सूरपाल राजा में पारस्परिक मित्रता थी। अपनी मित्रता को बढ़ाने के लिए समय समय पर वे आपस में एक दूसरे को श्रेष्ठ वस्तुओं की भेट भेजा करते थे। कार्य प्रसंग पर वे एक दूसरे को आपस में सहायता भी किया करते थे।

एक दिन महाराज सूरपाल ने बहुत सी श्रेष्ट वस्तुएँ देकर कुछ राज्य कार्य के निमित्त अपने सेनापति को चंद्रावती में महाराज वीरधवल के पास भेजा था। उस समय कई मनुष्यों के साथ राजकुमार महाबल भी पिता की आज्ञा लेकर गुप्त रीति से सादे वेष में चंद्रावती की शोभा देखने के लिए आया था।

जिस तेजस्वी - युवक के विषय में पाठक महाशय अभी ही पढ

आये हैं वह इसी पृथ्वी स्थान नगर का राजकुमार महाबल है। *कुमार* महाबल अनेक विद्याओं में अतीव निपुण था। उसके शरीर की सुन्दरता और चेहरे का वीरतेज देखने वाले को अपनी तरफ आकर्षित करता था।

राजकुमारी से प्रेम

पूर्व परिच्छेद में कथन किये मुताबिक राजकुमार अपने साथियों को पूछ कर चंद्रावती की शोभा देखने के लिए निकला है। शहर के राज मार्ग और चौराहे देखता हुआ तथा सुन्दर राजप्रसादों की शोभा का निरीक्षण करता हुआ वह मुख्य जनाने राजमहल के पीछे की ओर आ बैठा उस महल के पिछले भाग की खिड़की में बैठी हुई एक सुन्दर युवती शहर की शोभा देख रही थी। देखते देखते उस राजमहल के नीचे चलते हुए राजकुमार पर उसकी दृष्टि जा पड़ी। कामदेव के समान सुन्दर रूपवान और अपने समान वय वाले उस राजकुमार को देख कर, वह सुन्दरी विचार करने लगी, यह सुन्दर आकृतिवाला युवक कौन होगा यह साक्षात् कामदेव ही तो नही है? इसके चेहरे का तेज और सुन्दर चमकीली आंखें, विशाल वक्षस्थल, लम्बी लम्बी भुजायें, मूंगे के समान रक्त वर्ण के होठ, कैसे सुन्दर मालूम होते हैं। सर्वांग सुन्दर राजकुमार को देख कर वह युवती एक टक नजर से देखती हुई मूर्ति समान स्तब्ध हो गयी।

दैवयोग, राजकुमार की दृष्टि भी अचानक ही खिड़की में बैठी हुई उस युवती पर जा पड़ी। उसे देखते ही कुछ ठसक कर वह विचारने लगा - अहा ! क्या यह कोई स्वर्ग से उतरी हुई अप्सरा है? यह अनुरक्त दृष्टि से मेरे सन्मुख देख रही है। यह कुमारी होगी या विवाहिता ? इधर उस युवती के मन में भी यह विचार पैदा हुआ , प्रेम भरी दृष्टि से मेरे सन्मुख देखने वाला यह युवक क्या कोई राजकुमार है? इसे देखते ही मेरा मन इतना विवश क्यों हो रहा है? क्या यह कोई मेरे पूर्व जन्म का स्नेही होगा? इस प्रकार के अनेक विचारों में उलझी हुई उस सुन्दरी ने एक भोजपत्र पर दो श्लोक लिख कर महल के नीचे खड़े हुए उस युवक की तरफ डाले। रोमांचित होकर राजकुमार ने नीचे पड़ते हुए उस पत्र

को उठा लिया, और उसे मन में पढ़ा। उस पत्र में लिखा था -

हे सुन्दर आप कौन हैं? आप का नाम क्या है? आप कहाँ के रहने वाले हैं? यह बतलाइये। मेरे पर दृष्टि डाल कर आप ने मेरा मन चुरा लिया है। मैं वीरधवल राजा की कुमारी पुत्री हूँ। आपके ह्रदय के साथ मेरा ह्रदय एक हो गया है। मेरा नाम मलया सुन्दरी है।

इस पत्र को पढ़ कर राजकुमार योगी के समान एकाग्र चित्त से टकटकी लगा कर, राजकुमारी की ओर देखने लगा। चार आंखें मिलते ही दोनों का ह्रदय एक दूसरे की ओर खिंच गया और राजकुमारी की प्रेम भरी दृष्टि ने उसको मंत्र मुग्ध सर्प के समान स्तंभित सा कर दिया था। चित्रित मूर्ति के जैसा स्थिर होकर कुमार विचारने लगा। अहा! इस चतुर राजकुमारी ने साहस धारण कर अपना मनोगत भाव और परिचय दे दिया, परन्तु इसके पूछे हुए सवाल का जबाव मुझे किस तरह देना चाहिये, कुमार इसी विचार में लगा हुआ था, इतने में ही एक पुरुष आया और कुमार को देख कर कहने लगा, राजकुमार ? शहर में फिरना छोड़ कर अब आप वापिस अपने मुकाम पर चलिये। क्योंकि आज ही अपने नगर को प्रयाण करना है। जिस राज कार्य के लिए यहां आना हुआ था वह कार्य सफल हो गया है।

मनोगत भाव को दबा कर कुमार बोला - अहा ! देखो ये मकान कैसे सुन्दर लग रहे हैं? इस नगरी का किला कितना मजबूत है! राजमहलों ने इस नगरी की अत्यंत शोभा बढ़ा रक्खी है। मुझे तो अभी बहुत कुछ देखना है। अभी तक तो सिर्फ मकानों को ही देख पाया हूँ। तुम वापिस लौट चलने की बड़ी जल्दी करते हो। आने वाले पुरुष ने कहा - राजकुमार ! सेनापति का कहना है कि कुछ आवश्यक प्रसंग होने से हमें इसी वक्त देश को प्रयाण करना चाहिये। इसलिये आप जल्दी चलिये। यद्यपि इस समय वहां से कदम उठाना कुमार लिये अत्यंत दुष्कर था, तथापि विवश होकर उसे अपने सेवक के साथ वापिस मुकाम पर जाना ही पड़ा। वह मन ही मन सोचने लगा - मेरी कितनी कमजोरी ! मैं कौन हूँ इस प्रश्न का उत्तर भी कुमारी को न दे सका! धिक्कार है

मेरे कला नैपुण्य को, और मेरी तमाम बुद्धिमत्ता को। देश से इतनी दूर आकर भी अगर मैं कुमारी को न मिल सका तब फिर उसका मिलाप मुझसे कैसे होगा? इस समय रात्रि हो गई है, चारों तरफ अन्धकार छा रहा है।

मेरे साथी भी अभी तैयारी ही कर रहे है, जब तक ये तैयार हों तबतक मैं अकेला ही जाकर राजकुमारी से मिल आऊं और मैं कौन हूँ? उसके पूछे हुए प्रश्न का उत्तर दे आऊं।

पूर्वोक्त निश्चय कर किसी को कहे बिना ही कुमार गुप्त रीति से वहां चल दिया। वह शीघ्र गति से उसी महल के नीचे जा पहुँचा जहां से वापिस गया था। महल के पहले मंजिल की खिड़की खुली हुई थी, और वह किले के साथ ही लगती थी। दो तीन मंजिल के ऊपर रहने वाली कुमारी के साथ बात चीत करना सुलभ कार्य न था, तथा विशेष अन्धकार होने से दृष्टि का विषय भी आच्छादित हो चुका था। अर्थात् महल की जिस खिड़की में राजकुमारी के साथ चार आंखें मिली थी, अब अन्धेरे में वहां तक नजर न पहुँचती थी, इसलिये मलयासुन्दरी के मिलाप की आशा व्यर्थ सी प्रतीत होती थी। परन्तु वह हिम्मतवान पुरुष निराश न हुआ। अब साहस किये बिना काम नहीं चलेगा, यह सोचकर एक ही छलांग में जमीन से किले पर जा चढ़ा। वहाँ से, पास में ही पहले मंजिल की खिड़की खुली हुई थी राजकुमार ने उसी खिड़की से अन्दर प्रवेश किया। जिस खिड़की से कुमार ने प्रवेश किया था वह रास्ता वीरधवल महाराज की दूसरी रानी कनकवती के महलों में जाता था और उसके ऊपर की मंजिल में राजकुमारी मलया सुन्दरी रहती थी। संयोग वश इस समय कनकवती के महल में उसके सिवा एक भी दास दासी न थी। इस अन्धेरी रात में अपने महल में प्रवेश किये हुए राजकुमार को देखकर रानी कनकवती सोचने लगी अहा! ऐसे सुन्दर रूप वाला और इतना साहसी पुरुष आज तक मैंने कभी नहीं देखा! कनकवती ने खिड़की के द्वारा प्रवेश करते हुए राजकुमार को पहले कभी नहीं देखा था; इससे वह सोचने लगी कि इतने सारे पहरेदार होते हुए भी इस पुरुष ने यहां किस तरह प्रवेश किया होगा? सचमुच ही यह

कोई विद्याधर या महान् पुरुष मालूम होता है। यह किसी भी प्रयोजन से प्रसन्नता धारण किये बेधड़क चला आ रहा है। इस प्रकार विचार करती हुई राजवल्लभा कुमार के रूप से मोहित होकर उसके जाने के रास्ते में खड़ी होकर उसे कहने लगी; हे नरोत्तम! सुख से आइये, इस आसन पर बैठिए और प्रसन्न होकर मेरे मनोरथ को पूर्ण कीजिये।

रानी के वचन सुनकर राजकुमार चकित हो विचार में पड़ गया; वह सोचने लगा कि यह कोई राजा की रानी मालुम होती है या उसकी बहन होगी। ऐसे खतरनाक स्थान में आकर मनोवृत्ति पर संयम न रक्खा जाय तो स्वदारा संतोष व्रत कैसे रह सकता है? एवं इष्ट कार्य की सिद्धी होना भी असम्भव हो जायगा। मैं इतना साहस कर सिर्फ मलया सुन्दरी से मिल कर उसके प्रश्न का उत्तर देने के लिए ही आया हूँ, परन्तु किसी बुरी भावना को साधने के लिये नहीं। इसलिये मुझे इस स्थान में बड़ा सावधान रहना चाहिए । यद्यपि राजकुमारी मुझे दिल से चाहती है और मैं भी उसके स्नेह बन्धन में बंध चुका हूँ तथापि उसके माता पिता की सम्मति बिना मैं उसके साथ कदापि बिवाह न करूंगा। जब मुझ पर प्रेम करने वाली उस कुमारी स्त्री की तरफ मेरा मन विचलित न होना चाहिये। यह विचार कर कुमार ने समयानुसार अपना कार्यसिद्ध करने के लिये रानी कनकवती से कहा कि मैं मलयासुन्दरी के वास्ते कुछ वस्तु लेकर आया हूँ अतः मुझे उसका निवासस्थान बतलाइए। उसे वह चीज देकर वापिस लौटते समय आप जैसा फरमायेंगी वैसा किया जायेगा। कनकवती ने कुमार का कथन मानकर उसे ऊपर मलयासुन्दरी के महल में जाने का रास्ता बतलाया। कुमार ऊपर की मंजिल पर चढ़ गया रानी कनकवती भी धीरे-धीरे उसके पीछे चल कर, दरवाजे के पास छिप कर जा खड़ी हुई। ये दोनों आपस में क्या बातें करते हैं यह सुनने के लिये आतुर हो रही थी, कुमार को यह बात मालूम न रही।

मलयासुन्दरी से गुप्त मिलाप

राजकुमार के जाने के बाद राजकुमारी मलयासुन्दरी, स्थिर चित्त से उसी खिड़की में बैठी हुई महाबल कुमार के मार्ग की ओर दृष्टि लगाये

हुये उसी का ध्यान कर रही थी। अन्धकार हो जाने के कारण महाबल कुमार के समागम की आशा यद्यपि उसके ह्रदय में शिथिल हो रही थी, तथापि कुमार के साथ गया हुआ उसका दिल वापिस न आता था, वह खोये हुए धन को वापिस पाने की आशावाले मनुष्य के समान अन्धकार होने पर भी उसी दिशा में देख रही थी। वह उसके ध्यान में ऐसी निमग्न हो गयी कि कुमार के अन्दर आने पर भी उसकी ध्यान श्रेणी भंग नहीं हुई । कुमार उसके पास ही जा खड़ा हुआ। फिर भी ध्यान मग्न योगी के समान उसे कुमार का आना मालूम न हुआ।

उसकी हालत को देखकर कुमार बोल उठा - मृगाक्षी इधर देखो। मैं तुम्हारे ह्रदय में से निकलकर तुम्हारे सन्मुख खड़ा हूँ। कानों को अमृत के समान यह वचन सुनते ही अपनी गर्दन पीछे घुमाकर देखा तो उसके चित्त का चोर राजकुमार उसके सन्मुख खड़ा नजर आया। उसे देखते ही मलयासुन्दरी लज्जा से विनम्र मुख कर सन्मुख खड़ी हो गई। जिस तरह रात भर मुर्झाई हुई कमलिनी प्रातः सूर्य का दर्शन कर विकसित हो जाती है वैसे ही कुमार को देखकर राजकुमारी प्रफुल्लित हो गई, परन्तु लज्जा के कारण वह कुछ भी न बोल सकी। कुमार फिर बोला - राजकुमारी, मैं ऐसे भयानक स्थान में सिर्फ आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिये ही आया हूँ। मैं पृथ्वीस्थानपुर के महाराजा सूरपाल और महारानी पद्मावती का पुत्र हूँ। मेरा नाम महाबल कुमार है। तुम्हारी नगरी की शोभा देखने के लिये गुप्त रूप से मैं अपने परिवार के साथ यहाँ आया हुआ हूँ अर्थात् यहाँ की जनता और आपके पिता महाराज वीरधवल को मेरे आने का कोई पता नहीं है।

आश्चर्य पूर्ण तुम्हारी इस नगरी को देखते हुए मैं आज संध्या समय तुम्हारे महल के नीचे आ पहुँचा, जन्मान्तर के प्रेम को प्रगट करने वाला, तुम्हारे साथ मेरा दृष्टि मिलाप हुआ । इसके बाद जो कुछ हुआ उसका हम दोनों को अनुभव ही है। इस समय ऐसे संकट पूर्ण स्थान में तुम से मिलने के लिये मुझे तुम्हारा प्रेम ही खींच लाया है। अच्छा , अब मैं जाता हूँ। अपने साथियों को तैयारी करते हुये छोड़ आया हूँ,

क्योंकि इसी समय हमें पृथ्वीस्थान को प्रयाण करना है।

कुमार इसी समय वापिस चला जायगा यह सोचकर राजकुमारी लज्जा और मौन को छोड़कर बोली राजकुमार! अब मैं आपकों यहाँ से वापिस नहीं जाने दूंगी। आपके बिना मैं प्राण - धारण करने के लिए असमर्थ हूँ। यदि आप अति निष्ठुर हो, मेरी अवज्ञा कर चले जायेंगे तो मैं अपने प्राणों को त्याग दूंगी! इस लिये आप मुझ पर दया करके यहाँ ही रहे, मुझे आपके दर्शन मात्र से परम शान्ति प्राप्त हो जाती हैं। राजकुमार! मैं आपका क्या स्वागत करूँ? मैं आज से जन्म पर्यन्त आपको अपनी आत्मा समर्पण करती हूँ और यह लक्ष्मीपुंज हार ग्रहण करें। यों कहकर राजकुमारी ने अपने हाथ से महाबल के गले में लक्ष्मीपुंज हार डाल दिया, और बोली - कुमार! उस हारके बहाने से मैंने आपके गले में यह वरमाला पहनाई है। इसलिये इस वक्त गंधर्व विवाह कर आप मुझे अपने साथ ले चलें जिससे पारस्परिक वियोग जन्मदुःख न सहना पड़े। तुमने अपने मन का भाव प्रगट किया यह ठीक है, तथापि जनता के समक्ष माता पिता की सम्मति बिना इस तरह विवाह कर मैं तुम्हें साथ ले जाऊं यह कुलीन पुरुषों के लिए उचित नहीं है। ऐसा करने से मैं एक साधारण चोर के समान मनुष्यों की नजर से गिर जाऊँगा। ऐसे कार्यों में जल्दी करना उचित नहीं है। तुम शान्त चित्त से कुछ दिन तक यहाँ ही रहो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि घर जाकर ऐसा ही प्रयत्न करूँगा जिससे कि तुम्हारे माता पिता मेरे ही साथ तुम्हारा विवाह करें। कुमारी! अब धैर्य धारण कर प्रसन्न चित्त से मुझे जाने की आज्ञा दो।

रानी कनकवती का षडयंत्र

भावी दम्पती पूर्वोक्त प्रकार से आनन्द में मग्न होकर एक दूसरे से जुदा होने की तैयारी कर रहे थे। इतने ही में अकस्मात् उस कमरे के द्वार बन्द हो गये। यह देख सावधान हो कुमार बोला - द्वार किसने बंद किये? राजकुमारी चकित हो विचार में पड़ी थी, इसी समय बाहर से कनकवती की आवाज सुनाई दी। अरे दुष्ट महाबल! तू मुझे ठगकर कुमारी से आ मिला! याद रक्खो मुझे ठगने का फल तुम्हें अभी ही मिल

जाएगा। मलयासुन्दरी बोली - कुमार! यह मेरी सौतेली माता है, और इसी महल के पहले मंजिल में रहती हैं। मालूम होता है कि आपको यहां आते हुए उसने देख लिया है, और इससे वह आप पर कोपायमान हुई मालुम होती है। अहा! मेरी कितनी भयंकर भूल! मैने उसे यहां आई हुई को बिलकुल न जाना, सम्भव हैं उसने हम दोनों की तमाम बातें सुन ली हों।

कुमार बोला - सुन्दरी! जब मैं तुम्हारे पास आ रहा था उस वक्त इसने मुझे रास्ते में रोका था और कामातुर होकर इसने मुझसे विषय याचना की थी। मैं इसे असत्य उत्तर देकर तुम्हारे कमरें का रास्ता पूछकर ऊपर आ गया । परन्तु यह मुझे भी मालुम न हुआ कि खुफिया मनुष्य के समान मेरे पीछे आकर यह हमारी तमाम बातें सुनेगी। स्त्री स्वभाव के अनुसार यह हम पर अवश्य ही कुछ न कुछ आपत्ति लायगी। खैर कोई बात नहीं सब ठीक हो जायगा।

जिस वक्त महाबल और मलयासुन्दरी अपनी असावधानता का पश्चाताप कर रहे थे, उस वक्त कनकवती उनके कमरे के द्वार पर ताला लगा कर महाराजा वीरधवल के पास गई, और उसने वहां जाकर आंखों से देखा और कानों से सुना हुआ तमाम बृतान्त राजा से इस ढंग से कहा कि जिसके सुनने से राजा एकदम क्रोधित हो उठा। कनकवती के मुख से अपनी पुत्री का स्वच्छंदी आचरण सुनते ही राजा के नेत्र क्रोध से लाल हो गये। वह उसी वक्त अनेक सुभटों के साथ पकड़ो मारों, पकड़ों मारों वगैरह शब्द बोलता हुआ तत्काल मलयासुन्दरी के मकान के सामने आ पहुँचा। सुभटों ने महल को चारों तरफ से घेर लिया।

दूर से राजा के शब्द सुनकर भयभित होकर राजकुमारी थर्रा गयी। उसके दुखका पार न रहा, धैर्य छूट गया। ऐसे सुन्दर आकृतिवाले कुमार के प्राण कैसे बचेंगे? इस नर रत्न को आफत में डालने वाली मुझ विष कन्या को धिक्कार हो! हाय! प्रथम मिलाप में ही मैं अपने प्यार के प्राण लेनेवाली बनी। कुमारी को चिन्ता सागर में डूबी हुई देखकर महावल ने उसे धीरज दी। सुन्दरी! निश्चित रहो, मेरा कोई भी बाल

बाँका नहीं कर सकता। जो मनुष्य ऐसे भयंकर स्थान में प्रवेश करने का साहस रखता है उसके पास अपना रक्षण का उपाय भी अवश्य होता है।

यों कहकर कुमार ने अपने पास से एक गुटिका निकाली और मलया सुन्दरी के देखते देखते उसे अपने मुँह में डाल लिया। महावल कुमार ने आज दोपहर को ही राजसभा में महाराज वीरधवल के पास बैठी हुई महारानी चंपकमाला को देखाथा, अतः गुटिया के प्रभाव से वैसा संकल्प करने से कुमार का रूप चंपकमाला के रूप में परिवर्तित हो गया। अब वह साक्षात् चंपकमाला बनकर मलयासुन्दरी के पास बैठ गया मलयासुन्दरी भी अपनी माता का रूप देखकर आश्चर्य पाती हुई निर्भय हो शान्त चित्त से बैठ गई।

राजा ने ताला तुड़वा कर द्वार खोले और मलयासुन्दरी के मकान में प्रवेश किया। अन्दर घुसते ही महाराज वीरधवल ने मलयासुन्दरी को अपनी माता चंपकमाला के पास बैठी हुई देखा।

यह देख राजा, कनकवती की तरफ देखता हुआ बोला - प्रिये तुमने मुझे क्या कहा था? यहाँ तो उन बातों में से कुछ भी मालूम नहीं होता!

कनकवती ने कमरे के अन्दर आकर चारों तरफ अच्छी तरह देखा परन्तु अपनी माता सहित बैठी हुई मलयासुन्दरी के सिवा वहाँ पर कोई भी नजर नहीं आया।

कनकवती को देखकर चंपकमाला का रूपधारण करने वाला महाबल बोला - आओं बहन! आज अकस्मात् आप इस महल में कहाँ से! क्या आज महाराज मेरे पर कोपायमान है।

चंपकमाला रानी को बोलती हुई देख वहाँ आने वाले तमाम मनुष्य कनकवती की तरफ घृणा से देखने लगे। वे बोल उठे - सचमुच ही सौतनों की आपसी ईर्ष्या उनके निर्दोष बच्चों पर उतरती है, जिसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

लज्जायमान होकर कनकवती ने कहा - स्वामिन्! यहाँ पर आये हुये एक पुरुष को मेरे देखते हुए राजकुमारी ने लक्ष्मीपुंज हार दे दिया

है। आप उसकी तलाश करें। यह बात सुनते ही स्त्रीरूप कुमारने अपने गले से हार निकाल कर राजा की तरफ दिखा कर कहा - क्या आप इसी हार को तलाश करने आये हैं, उस हार को देख कर राजा की शंका सर्वथा दूर हो गई। कनकवती इर्ष्या के कारण ही ऐसी अनर्थ की बातें करती है, स्त्रियों में जरा भी विचार नहीं होता इत्यादि बोलता हुआ तमाम पुरुषों को साथ ले राजा अपने स्थान पर चला गया।

चंपकमाला रानी इस समय एक दूसरे ही महल में थी। थोड़ी देर के बाद चम्पक माला को जब यह घटना सब मालूम हुई तब उसने सोचा कि बात बढ़ाने से पुत्री की लघुता होगी इसलिए उसने इसबात पर बिलकुल लक्ष्य न दिया। तथा इस विषय की उसने किसी से बात तक भी न कही।

इधर अपनी लघुता हुई देख रानी कनकवती दुखी हो सोचने लगी - मैं अपने हाथों से द्वार का ताला लगा कर गई थी और वह वैसा ही पाया, फिर भी वह कुमार कैसे निकल गया? मैंने प्रत्यक्ष उसे अपनी आंखों से देखा था। क्या मुझे यह भ्रम हुआ था? हाय! सब मनुष्यों में मेरी कैसी निदा हो रही है! आज सब के सामने मैं असत्य बोलनेवाली साबित हुई! किसी पूर्व जन्म की दुश्मन यह कुमारी ही मेरी लघुता का कारण है। इसको देखते, बोलते हुए भी मुझे उद्वेग होता है। मैं इसे संकट में डाल कर या प्राणदंड दिला कर कब बदला लूंगी? इस तरह बड़बड़ाती हुई वह अपने महल में चली गयी।

कोलाहल शान्त होने पर बड़ी सावधानी के साथ मलयासुन्दरी ने चारों तरफ देखभाल कर मकान का दरवाजा बन्द कर लिया। तब महाबल ने भी अपने मुख से गुटिया निकाल कर अपना स्वाभाविक रूप बना लिया। वह कुमारी से कहने लगा-राजकुमारी ! यह सब महिमा इस गुटिया की है।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12; Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.N.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL- H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mudherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: 476-2994,455-0137
Fax: 91- 33 - 4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

JAIPUR EMPORIUM
227, A. J. C. Bose Road
Anandlok Building
Calcutta
Ph: 240 7937, 280 0494

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office: 11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal - 700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

Aparajita Boyed
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-355-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Ph: 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph: 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203, 1 M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 953902/252759
Fax: 033-252902

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Sreet
Calcutta - 700 016, Ph: 229 5047, 9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph: 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242,2469551
Resi: 4553632/4399, Fax: (91) 033-2495665
Gram: gloscab, E-mail: gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISSHES

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street,
(N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10,
Calcutta - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No-7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Ph: 287 0448.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

M. C. C. INVESTMENT & LEASING CO. LTD.
9, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 073
Ph: 235 7750/0741

SUTRIPTA ASIT KUMAR
2No. Ratanpur
Singur, Hooghly
West Bengal

MOHAN LAL JAIN
9, India Exchange Place
5th Floor, Room No. 6
Calcutta - 700 001
Ph: 220 8255/8528

SAMANT JUTE SUPPLY
12, Pollock Street, Calcutta - 700 001
Ph: 235 1001/5000

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

With Best wishes
R. D. B. Textiles
6, Brabourne Road.
Calcutta - 700 001
Ph: 225-5452

MANIK JAIN
Philatelia
One Moti Sil Street
Kolkata - 700 013
Ph: 228-8549

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram " GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.
Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है।

Dr. Jacobi

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone: 220-6702, 220-6400
Fax: (91) (33) 220-9333

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam -530020, Phone: 569208/563276
Fax: 91-0891-569326, Gram: BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'STHE ONLYTRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPEDTO MANUFACTURE 132 KV CLASSTRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3-6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7-8)		150.00
Vol -4	(satakas 9-11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.} — Price : Rs. 100.00
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani — Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. — Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira — Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, — Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. — Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. — Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, — Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. — Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. — Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma — Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 1 TITTHAYARA April 2000
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

આ. શ્રી
કૈલાસ
જ્ઞાનમં
કોબા,

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225